12.33 hrs.

DISCUSSION RE : APPROACH TO THE SEVENTH FIVE YEAR PLAN, 1985-90

MR. SPEAKER : Shri P.C. Sethi, Minister of Planning has given the notice of the following :

"That this House takes note of the 'Approach to the Seventh Five Year Plan, 1985-90', laid on the Table of the House on the 30th July, 1984."

I have admitted the motion and as a special case allowed him to move the motion to-day itself. He will simply move the motion to-day but discussion on this will be taken up at a later date.

THE MINISTER OF PLANNING (SHRI P.C. SETHI) : I beg to move :

"That this House takes note of the 'Approach to the Seventh Five Year Plan, 1985-90', laid on the table of the House on the 30th July, 1984."

MR. SPEAKER : Now we take up matters under Rule 377. Prof. Ajit Kumar Mehta.

12.34 hrs.

MATTERS UNCER RULE 377

(i) Need for issuing a Commemorative Stamp in memory of Birsa Bhagwan.

प्रो० अजित कुमार मेहता (समस्तीपुर) : अध्यक्ष महोदय, विद्वज्जनों, निस्पृह समाज सेवियों, राष्ट्रीय नेताओं, बहादुरों एवं स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों की स्मृति में डाक टिकट जारी करने की भारतीय डाक-तार विभाग की परम्परा रही है परन्तु उसका ध्यान अनजाने वन्य प्रदेश के अंधकार में रहकर देश और समाज के हित में अपना जीवन बलिदान करने वाले वीर बिरसा भगवान की ओर नहीं गया है। बहुत से लोग नहीं जानते हैं कि छोटा नागपुर के गिरिजनों के बीच उनका नाम भगवान कहकर बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है और यहां के लोक गीतों में उनको याद किया जाता है।

बिहार राज्य में छोटा नागपुर के उलीहातु गांव में बिरसा भगवान का जन्म 15-11-1874 में हुआ। उनकी प्राथमिक शिक्षा वरजू जर्मन स्कूल में हुई तथा वह 1866 से 1890 तक चाई वासा जर्मन मिशन स्कूल में रहे। उन्होंने छोटा नागपुर के प्रसिद्ध भूमि आन्दोलन में भाग लिया। कहा जाता है कि उनके ईसाई धर्म स्वीकार करने पर उनका क्रिश्चयन नाम दाउद तथा उनके पिता का मसीह दास रखा गया किंतु उनको मिशन के तौर तरीके पसन्द नहीं आये और वह फिर अपने पुराने धर्म में लौट आये। आनन्द गांव के आनन्द पाण्डे से वैष्णव धर्म की दीक्षा लेने के बाद उन्होंने गौबद्ध के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया।

उन्होंने जनजाति में राजनैतिक चेतना का संचार कर 1899 में अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिसकी आग सारे वन प्रदेश में फैल गई। रांची के कमिश्नर एच.सी. स्ट्रीटफील्ड और केमसेम रोज़ इसे निर्दयतापूर्वक कुचलने में असमर्थ रहे। 15-12-1899 को सेरलकव पहाड़ी पर सुंडा लोगों की गुप्त बैठक पर भारी हथियारों से लैस अंग्रेजी सेना और पुलिस ने हमला कर दिया। जनजाति के वीरों ने अपने परम्परागत हथियार, तीर कमान से उनका मुकाबला किया। इसमें औरतों बच्चों समेत बहुत से लोग मारे गये। फरवरी 1900 को बिरसा भगवान को गिरफ्तार कर चुटिया जेल में बन्द कर दिया गया जहां तरह-तरह की यंत्रणा के कारण 9-6-1900 को उनकी मृत्यु हो गई।

सरकार से मेरी मांग है कि जनजाति के इस महान् और स्वतन्त्रता सेनानी के सम्मान में डाक टिकट जारी करे।